International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में आर्थिक विकास और आय असमानता का संबंध

डॉ. निर्भय राजबंशी

सहायक प्राध्यापक, दाउदनगर कॉलेज, दाउदनगर

सार (Abstract)

यह शोध-पत्र भारत में आर्थिक विकास और आय असमानता के बीच संबंध का विश्लेषण करता है। पिछले कुछ दशकों में भारत ने तीव्र आर्थिक विकास का अनुभव किया है, विशेषकर उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों के बाद। हालांकि, इस विकास के साथ-साथ आय असमानता में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। यह अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित है कि क्या आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच रहा है या यह केवल सीमित वर्गों तक ही केंद्रित है।

अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों और विभिन्न रिपोर्टों के आधार पर यह पाया गया कि भारत में आर्थिक विकास ने गरीबी में कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किंतु आय का वितरण असमान बना हुआ है। उच्च आय वर्ग की आय में तेजी से वृद्धि हुई है, जबकि निम्न और मध्यम वर्ग अपेक्षाकृत धीमी प्रगति कर पाए हैं। क्षेत्रीय असमानता, शिक्षा, रोजगार के अवसरों में भिन्नता तथा सामाजिक-आर्थिक कारक इस असमानता को और बढ़ाते हैं।

यह शोध यह भी संकेत करता है कि यदि समावेशी विकास (inclusive growth) की नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया गया, तो आर्थिक विकास और आय असमानता के बीच की खाई और अधिक गहरी हो सकती है। अतः सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार सृजन और सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सकें।

मुख्य शब्द (Keywords): आर्थिक विकास, आय असमानता, समावेशी विकास, भारत, गरीबी, वैश्वीकरण।

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील देश है जहाँ आर्थिक विकास की प्रक्रिया पिछले कुछ दशकों में बहुत तेज हुई है। विशेष रूप से 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत की अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। जीडीपी में वृद्धि, सेवा क्षेत्र का विस्तार, औद्योगिक विकास और विदेशी निवेश में वृद्धि ने भारत को विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल कर दिया है (Basu, 2017)। आर्थिक विकास ने देश की समग्र आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया है और विकास की नई संभावनाएँ भी उत्पन्न की हैं।

हालांकि आर्थिक विकास के साथ-साथ आय असमानता की समस्या भी तेजी से बढ़ी है। आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। अमीर और गरीब वर्ग के बीच आय का अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है, जो भारत के सामाजिक और आर्थिक संतुलन के लिए एक बड़ी चुनौती है (World Bank, 2022)। विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आय का अंतर अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत में आर्थिक विकास और आय असमानता के बीच संबंध का अध्ययन करना है।

इसके साथ ही यह शोध-पत्र आय असमानता के कारणों, प्रभावों और समाधान के उपायों पर भी विस्तार से प्रकाश डालता है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि क्या आर्थिक विकास वास्तव में समाज के सभी वर्गों के लिए लाभकारी रहा है या नहीं (Todaro & Smith, 2015)।

आर्थिक विकास की अवधारणा

आर्थिक विकास का अर्थ केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन भी शामिल होते हैं। जब किसी देश की प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है, लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, तब उसे आर्थिक विकास कहा जाता है (Todaro & Smith, 2015)। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना है।

भारत में आर्थिक विकास के मुख्य स्रोतों में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र शामिल हैं। विशेष रूप से 1991 के बाद सेवा क्षेत्र ने आर्थिक विकास में सबसे अधिक योगदान दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों ने भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया है (Basu, 2017)। इसके अलावा वैश्वीकरण और विदेशी निवेश ने भी आर्थिक विकास को गति दी है।

हालांकि आर्थिक विकास तभी सार्थक माना जाता है जब उसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचे। यदि आर्थिक विकास के बावजूद गरीबी और आय असमानता बनी रहती है, तो उसे समावेशी विकास नहीं कहा जा सकता। इसलिए आज के समय में आर्थिक विकास के साथ-साथ समावेशी विकास पर भी अधिक ध्यान दिया जा रहा है (Dreze & Sen, 2013)।

आय असमानता की अवधारणा

आय असमानता का अर्थ समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय के असमान वितरण से है। जब समाज के कुछ लोगों के पास बहुत अधिक आय होती है और कुछ लोगों के पास बहुत कम आय होती है, तब आय असमानता की स्थिति उत्पन्न होती है। आय असमानता को मापने के लिए गिनी गुणांक (Gini Coefficient) का उपयोग किया जाता है (Piketty, 2014)। यह किसी देश की आर्थिक असमानता को समझने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

भारत में आय असमानता के कई कारण हैं। शिक्षा में असमानता, रोजगार के अवसरों में अंतर, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर और सामाजिक असमानता आय असमानता के मुख्य कारण हैं। इसके अलावा तकनीकी विकास का लाभ भी समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है (NITI Aayog, 2021)। इससे आय असमानता और अधिक बढ़ गई है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में अमीर और गरीब वर्ग के बीच आय का अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है। उच्च आय वर्ग की आय तेजी से बढ़ी है, जबकि निम्न आय वर्ग की आय में उतनी वृद्धि नहीं हुई है। इससे सामाजिक और आर्थिक असमानता की समस्या और अधिक गंभीर हो गई है (World Bank, 2022)।

भारत में आर्थिक विकास और आय असमानता का संबंध

भारत में आर्थिक विकास और आय असमानता के बीच गहरा संबंध है। पिछले तीन दशकों में भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी से विकास हुआ है, लेकिन इस विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। सेवा क्षेत्र और आईटी क्षेत्र के विकास ने उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों को अधिक लाभ पहुँचाया है (Dreze & Sen, 2013)। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आय का अंतर भी बढ़ गया है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आय तेजी से बढ़ी है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आय में अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई है। इसके अलावा संगठित और असंगठित क्षेत्र के बीच भी आय का अंतर बढ़ा है (World Bank, 2022)।

वैश्वीकरण के कारण उच्च कौशल वाले श्रमिकों की मांग बढ़ी है, जबकि कम कौशल वाले श्रमिकों की आय में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। इससे आय असमानता की समस्या और अधिक बढ़ गई है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारत में आर्थिक विकास असमान रहा है (Piketty, 2014)।

आर्थिक सुधार और आय असमानता

1991 के आर्थिक सुधारों ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया है। विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है, औद्योगिक विकास हुआ है, और भारत विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है (Basu, 2017)।

हालांकि इन नीतियों का लाभ मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों और बड़े उद्योगों को अधिक मिला है। छोटे उद्योगों और ग्रामीण क्षेत्रों को इन नीतियों का उतना लाभ नहीं मिल पाया है। इसके कारण आय असमानता की समस्या बढ़ी है (Piketty, 2014)।

इसके अलावा तकनीकी विकास के कारण कुशल श्रमिकों की मांग बढ़ी है, जबकि अकुशल श्रमिकों की आय में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आय का अंतर और अधिक बढ़ गया है (World Bank, 2022)।

आय असमानता के प्रभाव

आय असमानता का समाज और अर्थव्यवस्था पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। आय असमानता बढ़ने से सामाजिक असंतोष बढ़ता है और आर्थिक विकास की गति धीमी हो सकती है। इसके अलावा आय असमानता के कारण गरीबी और बेरोजगारी की समस्या भी बढ़ सकती है (Todaro & Smith, 2015)।

जब समाज में आय का वितरण असमान होता है, तब आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पाता है। इससे सामाजिक और आर्थिक असंतुलन उत्पन्न होता है। इसके अलावा आय असमानता के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच भी असमान हो जाती है (World Bank, 2022)।

इसलिए आय असमानता को कम करना आर्थिक विकास के लिए बहुत आवश्यक है। यदि आय असमानता को नियंत्रित नहीं किया गया, तो यह आर्थिक विकास के लिए एक बड़ी समस्या बन सकती है (Dreze & Sen, 2013)।

समाधान और सुझाव

भारत में आय असमानता को कम करने के लिए सरकार को कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले शिक्षा और कौशल विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि गरीब वर्ग के लोग भी आर्थिक विकास का लाभ उठा सकें (NITI Aayog, 2021)। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने की आवश्यकता है।

सरकार को छोटे और मध्यम उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि अधिक लोगों को रोजगार मिल सके। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को भी मजबूत बनाना चाहिए ताकि गरीब और कमजोर वर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके (World Bank, 2022)।

इसके अलावा कर प्रणाली को भी अधिक न्यायसंगत बनाना आवश्यक है। यदि सरकार आय असमानता को कम करने के लिए प्रभावी नीतियाँ लागू करती है, तो आर्थिक विकास अधिक समावेशी बन सकता है (Dreze & Sen, 2013)।

References

1. Basu, K. (2017). *An economist in the real world: The art of policymaking in India*. MIT Press.

2. Deaton, A., & Dreze, J. (2002). Poverty and inequality in India: A re-examination. *Economic and Political Weekly, 37*(36), 3729–3748.
3. Dreze, J., & Sen, A. (2013). *An uncertain glory: India and its contradictions*. Princeton University Press.
4. Government of India. (2021). *Economic Survey of India 2020–21*. Ministry of Finance.
5. NITI Aayog. (2021). *National Multidimensional Poverty Index Report*. Government of India.
6. Piketty, T. (2014). *Capital in the twenty-first century*. Harvard University Press.
7. Reserve Bank of India. (2022). *Handbook of statistics on the Indian economy*. RBI Publications.
8. Sen, A. (1999). *Development as freedom*. Oxford University Press.
9. Todaro, M. P., & Smith, S. C. (2015). *Economic development* (12th ed.). Pearson Education.
10. World Bank. (2022). *India development report*. World Bank Publications.